'अप्प दीपो भव'

वॉयस ऑफ बुद्धा

Postal Reg. No.-DL(ND)-11/6144/2016-18
WPP Licence No.- U(C)-101/2017-18
R.N.I. No. 68180/98

Date of Publication : 15.12.2017
Date of Posting on concessional rate :
2-3 & 16-17 of each fortnight

मूल्य : पाँच रूपये

प्रेषक : डॉ0 उदित राज (राम राज) चेयरमैन – जस्टिस पब्लिकेशंस, टी–22, अतुल ग्रोव रोड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली–110001, फोन : 23354841–42

Website : www.uditraj.com E-mail: parisangh1997@gmail.com

● वर्ष : 21 ● अंक 2 ● पाक्षिक ● द्विभाषी ● कुल पृष्ठ संख्या 8 ● 1 से 15 दिसंबर, 2017

पद्मावती नहीं मूंछ की लड़ाई

डॉ. उदित राज

देश ही नहीं पूरी दुनिया जान चुकी है कि पद्मावती फिल्म का विरोध हो रहा है। इसे न तो सेंसर बोर्ड ने देखा है और न ही विरोध करने वालों ने। पद्मावती राजपूत जाति से थी और उसको हासिल करने के लिए अलाउद्दीन खिलजी ने बल प्रयोग का रास्ता अपनाया जो कि मुसलमान था। हालाँकि खिलजी वंश समय 1296 से 1316 तक रहा है। जबकि पद्मावती का जिक्र मलिक मोहम्मद जायसी ने अपने लेखन में किया, जिनका जीवनकाल 1450 से 1550 था। लगभग ढाई सौ साल का अंतर है जब यह तर्क इतिहासकार देते हैं तब विरोध का आधार आस्था में तब्दील हो जाती है। विरोध करने वाले कहते हैं कि उन्हें ऐतिहासिक तथ्य से मतलब नहीं है पद्मावती का जुड़ाव राजपूत जाति से है इसलिए यह उनकी अस्मिता पर प्रहार है। इस विवाद में सबसे ज्यादा अहम् सवाल जो पृष्ठभूमि में है और सतह पर दिखाई नहीं देता वह है पुरुषवादी सोच। खुद अपनी महिला के साथ कुछ भी करे लेकिन दूसरा कैसे आँख उठा सकता है। राजस्थान में ऐसे गांव हैं, जहां 100 वर्ष के बाद बारात आयी, क्योंकि लड़कियों को पैदा होते ही मार दिया जाता था। क्या मारपीट करना, धमकी देकर रुकवाना ही एक मात्र रास्ता है। संगठन सेना की भूमिका निभाएं क्या यह लोकतंत्र का मजाक नही तो क्या है? यह प्रश्न भी

खड़ा होता है कि क्या वास्तव में महिलाओं के प्रति इतनी चिंता है।

विरोध की जिम्मेदारी करणी सेना ने ले रखी है। नाम से यह प्रतीत होता है जैसे सरकार के पास सेना का अभाव हो और इनको बनाने की जरुरत पड़ी हो। देश में तमाम सेनायें हैं जैसे रणबीर सेना, शिव सेना, हिन्दू सेना, रिपब्लिकन सेना, महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना। है तो मुंछ की लड़ाई, मकसद चाहे कुछ और बताया जाए। महाराष्ट्र में शिव सेना और महाराष्ट्र नव निर्माण सेना आये दिन कुछ सेना जैसे कृत्य करते रहते हैं लेकिन निहत्थो, गरीबों और उत्तर–भारतीयों के ऊपर। भारत और पकिस्तान की लम्बी सीमा है अगर ये सभी सेनायें अपने कार्यकर्ताओं की तैनाती कर दें तो पाकिस्तान से घुसपैठिये क्या परिंदा भी नहीं पर मार सकता। क्या ऐसा कुछ कार्य यह कर सकते हैं? खुद–ब–खुद संभावनाएं तलाशें तो ज्यादा अच्छा है। जो सेना जनतांत्रिक प्रणाली से चुनी हुई सरकार की न हो तो यह किसकी सेना है? क्या मान लिया जाये कि जनतंत्र और सामंतवाद समान्तर रूप से कार्य कर रहे हैं। ये सेनायें जाति, धर्म और क्षेत्र की ताकत से बनी हैं न कि जनतांत्रिक सरकार से। क्या जनतांत्रिक सरकार के लिए यह चुनौती नही है? चुनौती तो है लेकिन इतनी लाचारी सरकारों का इनके सामने क्यों होता है? कहीं न कहीं जो ताकतें इनके पीछे हैं वे विभिन्न दलों में अपने चेहरे छुपा कर बैठे हुए हैं। अगर ऐसा न होता तो इन सेनाओं का अस्तित्व 24 घन्टे में खत्म किया जा सकता है।

दुनिया में सबसे बड़ा धर्म ईसाई है और कौन नही जानता इनके प्रभाव में कितनी सरकारें और संस्थाएं हैं जिनका दुनिया में दबदबा है। ईसा मसीह पर ''दा वंशी कोड'' फिल्म 2006 में बनी। ईसा मसीह को मैग्दालेन से शादी करते हुए फिल्म में दिखाया गया। यही नहीं बल्कि उनसे बच्चा भी पैदा हुआ दिखाया गया। तमाम कैथोलिक संगठन ने फिल्म निर्माता रोन हॉवर्ड से अपील किया कि फिल्म की शुरुआत में इतना लिख दे कि यह काल्पनिक है अर्थात डिस्क्लेमर। फिल्म निर्माता टस से मस नहीं हुआ। दुनिया की सबसे ताकतवर धार्मिक गद्दी वैटिकन कार्डिनल अरिन्जे ने अपील किया कि इसके खिलाफ कानूनी कार्यवाही हो परन्तु ऐसा कुछ हो न सका। ईसाईयों के लिए उनके भगवान ईसा मसीह क्या स्थान रहते हैं हम सब जानते हैं। सामंत की माँ, बेटी और पत्नी का क्या सामाजिक स्तर रहा है, यह सभी जानते हैं। दा–वंशी कोड के अलावा भी तमाम फिल्म और डॉक्युमेंट्री ईसा मसीह पर इस तरह से बनी लेकिन लाठी–डंडे की बात कहीं नहीं हुई। नाक काटने और इनाम रखने की तो बात तो दूर बल्कि फिल्म की बंदी पर भी कोई आन्दोलन की धमकी नहीं। यह ईसाइयत की सबसे बड़ी मजबूती है। न्यूजीलैण्ड, आस्ट्रेलिया और अमेरिका जैसे नए देश 300 वर्ष के अन्दर बने और वहां इसाईयत फैल गयी। लाठी–डंडे का सहारा लिया होता तो शायद वे भी इतने बड़े लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकते। दा–वंशी कोड का जवाब लेखकों और ईसाईयों ने समानान्तर लेखन किया और अपने पक्ष को रखा और अन्य जनतांत्रिक तरीके जैसे– सेमिनार, डॉक्युमेंट्री फिल्म आदि से खंडन किया।

फूलन देवी पर जब फिल्म बनी तो अर्धनग्न दिखाया गया। न तो उनकी जाति के और न ही दलित मारपीट पर उतरे। महिला के प्रति इतना सम्मान था तो करणी सेना उस समय भी मैदान में उतरती। यह भी कह सकते हैं कि वह तो उनकी जाति कि नहीं थी तो यह सिद्ध होता है कि समाज जातियों का है। बलात्कार पर और घटती हुई लड़कियों की संख्या पर यह सेना कभी मैदान में नही आई। इससे कला और अभिव्यक्ति पर कितना प्रतिकूल असर पड़ा अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं है। खुद क्या राजपूतों का नुकसान नहीं होगा कि इन्होंने गैर जनतांत्रिक तरीका अपनाया और पढ़े–लिखे भाषा में जवाब नहीं दिया अगर मान सम्मान की बात है भी तो। पद्मावती दुश्मन के हाथ में न आए, इसलिए हजारों महिलाओं के साथ जौहर कर लिया। आक्रमण के समय इस स्थिति में पुरुष समाज भी तो आता रहा और पराजित होने के बाद कितना अपमानित होना पड़ता था तो जौहर की पालना इनको भी करना चाहिए था। दुनिया क्या कहती होगी कि भारत में पढ़े–लिखे तरीके से जवाब नही दिया जाता अगर भावना और आस्था पर ठेस पर आक्रमण हुआ है तो।

***

इस बार अगर चूके तो शायद आगे अवसर भी न मिले

भारी संख्या में 26 दिसंबर को रामलीला मैदान, नई दिल्ली पहुंचे

साथियों जय भीम, जैसा कि आप लोगों को पता ही है कि आगामी 26 दिसंबर, 2017 को दिल्ली के रामलीला मैदान में मुख्य रूप से पदोन्नति व निजी क्षेत्र में आरक्षण के लिए एवं ठेकेदारी प्रथा की समाप्ति हेतु रैली आयोजित की गयी है। क्या एक दिन भी काम रोकने या छुट्टी लेने से आर्थिक हानि या आराम में फर्क पड़ जाएगा, जबकि पूरे साल काम और धंधा करते रहते हैं। इससे न तो लोग गरीब होगें न आराम और पारिवारिक सुख में कमी होगी लेकिन एक दिन सभी रामलीला मैदान, नई दिल्ली में एकत्रित हो जाएं तो ताक़तवर बनने शुरू हो जाएंगें और आने वाले दिनों में परिवार भी खुशहाल हो सकेगा। यदि इस बार चूके तो शायद आगे अवसर भी न मिले। आप लोगों ने अपने स्तर से इसकी सफलता हेतु तैयारी कर ही लिया होगा। रेल मंत्रालय ने रैली में आने और जाने वाले लोगों के लिए अतिरिक्त कोच के संबंध में आदेश निकाल दिया है, जो ज्यों का त्यों पेज संख्या 7 पर प्रकाशित किया जा रहा है। उसकी कॉपी लेकर संबंधित अधिकारियों से मिलकर आवश्यक कार्यवाही करके कोच बुक करा सकते हैं। जिन लोगों की टिकटें वेटिंग में हैं वे अतिशीघ्र पी.एन.आर. हमें भेज दें। सर्दी के समय ज्यादातर रेल गाड़िया देरी से चलती हैं, इसलिए कोशिश करें कि 25 दिसंबर को ही दिल्ली पहुंच जाएं, ताकि रैली में शामिल होने में कठिनाई न हो। ठहरने की व्यवस्था डॉ. अम्बेडकर भवन, नजदीक झंडेवालान मैट्रो, नई दिल्ली पर की गयी है। जो लोग ट्रेन से आ रहे हैं और स्वयं डॉ. अम्बेडकर भवन, नई दिल्ली पर पहुंचने में असमर्थ हैं तो वे पहले ही हमें बता दें कि उनकी ट्रेन कितने बजे पहुंच रही है, ताकि रेलवे स्टेशन से लाने की व्यवस्था करायी जा सके।

रैली से संबंधित खबरों से अपडेट रहने के लिए परिसंघ के फेसबुक www.facebook.com/aiparisangh पेज को लाइक करें, ट्विट्र @aiparisangh को फॉलो करें और youtube channle all india parisangh भी देखें।

रैली के संबंध में अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित लोगों से संपर्क किया जा सकता हैं – संजय राज मो, 9654142705, इन्द्रेश चन्द्र मो. 9013869549, सुमित मो. 9868978306, परमेन्द्र मो. 9013869539, बाबूलाल मो. 9918023024, सत्यानारायण मो.9873988894

डॉ. उदित राज, राष्ट्रीय चेयरमैन

परिसंघ महिला प्रकोष्ठ के तत्वावधान में महिला सशक्तिकरण पर नागपुर में सम्मेलन सम्पन्न

दिनाँक – 18/11/17 को नागपुर, अनुसूचित जाती/जनजाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ, महिला प्रकोष्ठ, द्वारा महिला सशक्तिकरण व आरक्षण विषय पर स्थानीय हिंदी मोर भवन में आयोजित किया गया। जिसमें प्रमुख मार्गदर्शक स्वरूप सांसद डॉ. उदित राज, महिला प्रकोष्ठ की राष्ट्रीय संयोजिका – सुश्री सविता कादियान पवार, महाराष्ट्र परिसंघ महिला अध्यक्ष ममता गेडाम, महाराष्ट्र प्रदेश के अध्यक्ष– सिद्धार्थ भोजने, डॉ. आर. के. गेडाम, तथा नागपुर शहर अध्यक्ष दीपक तभाने उपस्तिथ थे।

डॉ. उदित राज जी जन सभा को संबोधित किया

हमे मास्टर चाबी से ध्यान हटाकर समाज एकता पर ध्यान देनेकी जरूरत है। इस परिसंवाद में मुख्य मार्गदर्शन करते हुए डॉ. उदित राज ने कहा, कि आज प्रत्येक व्यक्ति पॉलिटिकल पॉवर की मास्टर चाबी की ओर भाग रहा है लेकिन सामाजिक एकता की ताकत चाबी की ओर किसी का ध्यान नही है जिससे समाज हर रोज पिछड़ता जा रहा है, इसलिए मास्टर चाबी की चाह छोड़ कर सामाजिक एकता की ओर ध्यान रखना चाहिए। दलित नेता को वोट दलित के कहने पर नही, तो स्वर्ण के कहने पर मिलता हैं और दलित हमेशा पिछड़ता जाता हैं ऐसे में महिलाओं की जबाबदारी बढ़ जाती हैं। इसलिए महिलाओं को आंखो में तेल डालकर सदैव सजग रहने की आवश्यकता है। देश मे 21 रेलवे स्टेशनों को निजीकरण के हांथो देकर वहाँ का आरक्षण समाप्त किया जा चुका है और आरक्षण को पूरी तरह समाप्त करने की दिशा में काम चल रहा है ऐसे समय नेताओं को दोष देने के बजाय, नेताओं को कोसने के बजाय दलित का वोट दलित नेता को ही मिल सके इस के लिये संगठित होकर अपनी हांथी जैसी ताकत का प्रदर्शन किया जाना चाहिए ।

परिसंघ महिला प्रकोष्ठ राष्ट्रीय संयोजिका सविता कादियान पंवार जन समुह को संबोधित करते हुए

महिला प्रकोष्ठ की राष्ट्रीय संयोजक श्रीमती सविता कदियान पंवार जी ने मंच से महाराष्ट्र की महिलाओं को ज्यादा से ज्यादा साथ मे आने व जुडने के लिए कहा सविता जी ने महिलाओं को आजके समय मे सशक्त होना चाहिए जब तक महिलाए आत्मनिर्भर नही होगी उनका खुद पर विश्वास पैदा नही हो सकता, उन्होंने आजकल पद्मावती फिल्म पर जारी विरोध पर कहा कि क्या स्वर्ण समाज या बहुजन समाज की महिलाओं की इज्जत अलग – अलग है महिला तो महिला ही होती है पर हमारे समाज की सोच क्या दर्शाती है पद्मावती के विरुद्ध प्रदर्शन को ढकोसला करार देते हुए कहा, कि फूलन देवी को अर्धनग्न दिखाया गया तब किसी ने उसका विरोध नही किया लेकिन अब एक काल्पनिक नाम के लिए बेकार का बखेड़ा खड़ा किया जा रहा है। आए दिन अखबारों मे यह खबर सुर्खियॉ बनी हुई है। पद्मावती तो एक काल्पनिक पात्र भर है। आज वक्त है देश की 50 प्रतिशत आबादी हमारी महिलाओं को सजग होने का। क्योकि जब तक महिला का विकास नही होगा तब तक देश का विकास नही। आज महिलाएं देश मे हर क्षेत्र मे आगे है, प्रत्येक विभाग मे और तो और अब हमारी महिलाए फाइटर प्लेन भी उड़ाने लगी है जिसमें आज तक सिर्फ पुरूषों का ही क्षेत्र माना जाता हैं।

डॉ. उदित राज जी के साथ महिला प्रकोष्ठ राष्ट्रीय संयोजिका सविता कादियान पंवार, अर्चना भोयर, नागपुर अध्यक्ष ममता गेडाम एवं महिला प्रकोष्ठ नागपुर टीम

आज बहुत खुशी की बात है कि बहुत कम समय मे महिला प्रकोष्ठ आज धीरे धीरे आगे बढने की ओर अग्रसर है सविता जी के नेतृत्व मे दिल्ली मे आयोजित दो कार्यक्रमो के बाद दिल्ली से बाहर महाराष्ट्र के नागपुर मे श्रीमती ममता गेडाम जी ने कार्यक्रम आयोजित करवाया यह महिला प्रकोष्ठ की बहुत बडी शुरुआत है और सविता जी ने कहा कि हमे उम्मीद है कि जल्द ही इस देश के प्रत्येक राज्य मे महिला प्रकोष्ठ का कार्यक्रम आयोजित होगा और साथ ही परिसंघ की 20वीं महारैली मे महिलाओं की ज्यादा से ज्यादा भागीदारी हो ऐसा आह्वान भी मंच से सविता जी ने किया। साथ में ममता गेडाम जी को कार्यक्रम की सफलता के लिए बधाई व शुभकामनाऐं दी और उनको अपने महाराष्ट्र मे जल्द से जल्द महिला संगठन तैयार करने के लिए भी कहा ।

दीपक तभाने ने भी अपने विचार रखे। संचालन हरिष नक्के ने किया। कार्यक्रम में विदर्भ से परिसंघ के पदाधिकारियों ने भी भाग लिया तथा इस कार्यक्रम के सफलतार्थ सर्वश्री जीवन रामटेके, एस. आर. चवरे, अर्चना(रेशम)भोयर, सुभाष बोरकर, विनोद कोटांगडे, सी. डब्ल्यू . वैघ. विजय शेंडे, राकेश तिवारी, महेन्द्र हाडके, गोपनारायण, भिमराव तलवारे, गणेश ऊके, आनंद सायरे, घनश्याम मांगे, विलास मनोहरे, सुखदेव मनोहरे, संजय शेडके, रवि सोमकुंवर, विजय शेंडे, सुबोध मेश्राम, बी.डी. रामटेके, तथा संगीता वाघमारे, नलिनी राउत, संध्या जी, पूजा किरनाके, सुशीला शेलारे इत्यादि कार्यकर्ताओं ने अथक प्रयास किया ।

– सविता कादियान पंवार
राष्ट्रीय संयोजक
महिला प्रकोष्ठ
मो. 9873944026

***

तिब्बत को दलाई लामा ने बर्बाद किया है

संजय जोठे

दलाई लामा जैसे लोग अपने देश और संस्कृति को बर्बाद करके विकसित और सभ्य देशों को सभ्यता और धर्म सिखाते हैं तो बड़ा मजा आता है। ये बिलकुल भारतीय बाबाओं जैसी लीला है। अपने खुद के घर में सडांध और बीमारियाँ फैली है और दूसरों के साफ सुथरे घर में जाकर सुगंध, स्वच्छता और सौन्दर्य पर भाषण देते हैं।इनका अपना ज्ञान पिछली कई सदियों से तिब्बत को लगातार खोखला करता गया। भयानक अंधविश्वास, शोषण और अशिक्षा ने वहां के आम जन को जानवरों जैसी जिल्लत में बनाये रखा। महिलाओं और गरीबों सहित बच्चों के अधिकारों को कुचला गया।

चीन का आक्रमण बहुत बाद में हो रहा है। चीन के आने के पहले ही वहां पुनर्जन्म पर आधारित दलाई लामा नाम की संस्था ने इतना शोषण किया है, जिसका कोई हिसाब नहीं। एक पूरा देश और संस्कृति धीरे धीरे बर्बाद की गयी है इन महाशय के द्वारा। ये कहते हैं कि यह पहले वाले लामा के पुनर्जन्म हैं। अगर इनकी बात मान भी लें तो ये और बड़े अपराधी सिद्ध होते हैं। पहले दूसरे या दसवें ,बारहवें के पुनर्जन्म हैं, इसका अर्थ ये हुआ कि तिब्बत के समाज और संस्कृति को गर्त में पहुंचाने के लिए उन्होंने एक व्यक्ति या एक संस्था के रूप में हर पीढ़ी में खुद ही जरुरी निर्णय लिए हैं।

इसका क्या मतलब हुआ ? यही मतलब हुआ कि आज तिब्बत जो कुछ है, वह इन्हीं महाशय की देन है। कोई राष्ट्र या समाज जब इतना लचर और दकियानूसी हो जाए तो अडोस पड़ोस के देश उस पर चढ़ाई कर सकते हैं। चीन ने यही किया। चीन दलाई लामा द्वारा बनाई परिस्थितियों का अपने हित में शोषण कर रहा है। दलाई लामा से आज तक सही प्रश्न नहीं पूछे गए हैं। उनसे पूछा जाना चाहिए कि तिब्बत की संस्कृति और समाज को नष्ट होने से बचाने के लिए अतीत में क्या किया जा सकता था ? फिर उनके चेहरे का रंग देखिये। उनसे ध्यान समाधी, सुख, दुःख, स्वर्ग, नरक या अध्यात्म के चलताऊ सवाल करने से कुछ नहीं होता। ऐसे सवालों का जवाब देना सभी को आता है। उन जवाबों से न आज तक कुछ हुआ है न आगे कुछ होगा। अब ये सज्जन अपने समाज और संस्कृति की होली जलाकर दुनिया भर में ज्ञान बाँट रहे हैं। ये अच्छा मजाक है। अमेरिकी राजनीति को अगर चीन के खिलाफ एक मोहरे की जरूरत न हो तो ये इन महाशय की महानता अभी तुरंत खो जायेगी।

कम से कम भारतीय ओबीसी, दलितों और स्त्रीयों को इन महाशय से बचकर रहना चाहिए। ये जब भी मिलें इनसे अध्यात्म के नहीं बल्कि तिब्बत के समाज के योजनाबद्ध विनाश के संबंध में सवाल पूछिए। तब देखिये इनका सारा चमत्कार धरा रह जाएगा।

http://www.shunyakal.com/tibet-is-ruined-by-the-dalai-lama/

***

जम्मू कश्मीर के अंबारां में था नालंदा से भी बड़ा बौद्ध महाविहार

चार संस्कृतियों का संगम रहा है यह स्थान

30 एकड़ है नालंदा का क्षेत्रफल 99 मीटर लंबे और 33 मीटर चौड़ाई में हुई है अंबारा में खोदाई

चिनाब नदी के किनारे अखनूर के पास अंबारां में कभी बिहार के नालंदा विश्वविद्यालय और महाविहार से भी बड़ा महाविहार था। हालांकि, अभी इस पूरे इलाके की पूरी खोदाई होनी बाकी है। इस इलाके की भौगोलिक स्थिति बताती है कि यहां कई प्राचीन संस्कृतियों और सभ्यताओं के अवशेष छिपे हैं। यह स्थान इसलिए भी खास है कि यहां हुई खुदाई में विशेष किस्म की एक मंजूषा (कास्केट) मिली है। इसमें कुछ रत्नों के साथ ही किसी मनुष्य के अवशेष मिले हैं। इसमें राख और अस्थियों के कुछ टुकड़े हैं। करीब डेढ़ दशक पहले भारतीय पुरातत्व सर्वे (एएसआई) द्वारा यहां की गई खुदाई में चार प्रमुख संस्कृतियों के अवशेष मिले हैं। इनमें प्री-कुषाण काल ईसा पूर्व पहली शताब्दी, ईसा पूर्व पहली से तीसरी शताब्दी तक कुषाण काल, क्षेत्रफल करीब 30 एकड़ है, जबकि अंबारां में खोदाई के स्थल के आसपास के इलाके में करीब 30 से 40 एकड़ में मिट्टी के टीले फैले हैं।

चौथी-पांचवीं सदी गुप्त काल और गुप्त काल के बाद छठवीं से सातवीं शताब्दी के अवशेष मिले हैं। इनमें टेराकोटा की मूर्तियां, मास्क कुछ लोहे के औजार और कई स्तूपों के अवशेष मिले हैं। अगस्त 2014 में इस स्थान के महत्व को देखते हुए बौद्ध गुरु दलाईलामा भी यहां की यात्रा कर चुके हैं।

बिहार में नालंदा विश्वविद्यालय और महाविहार का इन टीलों से पता चलता है कि इनके नीचे तमाम पुरातात्विक रहस्य छिपे हैं। एएसआई यहां महज 99 मीटर लंबाई और 33 मीटर चौड़ाई के क्षेत्रफल में ही खुदाई कर पाया है। इसका कारण यह रहा कि इतनी ही जमीन सरकारी है। इसके आसपास स्थानीय किसानों की जमीन होने के कारण वह यहां खुदाई नहीं कर पाया। अखनूर हजारों साल से बौद्ध भिक्षुओं और व्यापारियों के लिए ऐतिहासिक रूट रहा है। नालंदा, बोधगया, सारनाथ, कौशांबी अखनूर होते हुए भिक्षु तक्षशिला (अब पाकिस्तान में) तक की यात्रा करते थे। इस पूरे रूट की तलाश अभी बाकी है। यदि पूरे इलाके की खुदाई कर महाविहार के वास्तविक स्वरूप को सामने लाया जाए तो यह स्थान भी सारनाथ, बोधगया और नालंदा की तरह एक बड़ा पर्यटन केंद्र बन सकता है। अंबारां में जिस महाविहार की खोज हुई है, उसका अस्तित्व कैसे समाप्त हुआ होगा, यह अभी रहस्य ही बना हुआ है। विदेशी आक्रमण या प्राकृतिक हलचल इसके कारण हो सकते हैं। यह अभी शोध का विषय है।

बौद्ध धर्म में पवित्र माना जाता है अवशेष

माना जाता है कि देश में तमाम स्थानों पर मिलने वाले स्तूपों में बुद्ध के अवशेष रखे हुए हैं। बुद्ध के अवशेषों को अनुयायियों में बहुत ही पवित्र माना जाता है। यहां मिली मंजूषा में राख और कुछ हड्डियां मिली हैं। जिस तरह से इसे सजावट के साथ रखा गया था, उससे यही प्रतीत होता है कि राख और अस्थियां बौद्ध धर्म के किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति की हो सकती हैं। यह अभी शोध का विषय है कि ये अवशेष किसके हैं। बुद्ध के ही हैं या उनके किसी महत्वपूर्ण शिष्य के हैं। मंजूषा की ऊंचाई 2.4 सेंटीमीटर और परिधि 5. 6 सेंटीमीटर है। इसे सोने के 30 पतले पथरों से सजाया गया है। इसके अंदर सोने की मंजूषा मिली है। इस सोने की मंजूषा के अंदर चांदी की मंजूषा और इसके अंदर कुछ मोती, चांदी के दो सिक्के, तांबे के कुछ सिक्के, राख और कुछ अस्थियां रखी गई थीं।

https://www.amarujala.com/jammu-and-kashmir/ambarn-buddhist-monastery-was-bigger-than-nalanda-monastery?pageId=2

***

कुमार विश्वास जी बताएं कि उनकी दादी ब्याह के साथ सफाई करने वाली के लाने को मानव तस्करी नहीं तो क्या ?

लक्ष्मी अम्मा (सफाई कर्मी) ने यदि विश्वास जी की मां एवं चाची के घूंघट न ठीक करने पर डांटा तो क्या मेहतरानी से ब्राम्हण बन गयी ?

आरक्षण डॉ. अम्बेडकर की देन है न कि वी.पी. सिंह की

2019 में क्या भारतीय जनता पार्टी देश का धार्मिक ढांचा तोड़ेगी

नई दिल्ली, 4 दिसंबर, 2017.

डॉ. उदित राज, अनुसूचित जाति/जनजाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ के राष्ट्रीय चेयरमैन ने कहा कि आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता श्री कुमार विश्वास ने कहा कि उनकी दादी माँ के साथ सफाई करने वाली लक्ष्मी अम्मा आर्यी थी। जाहिर सी बात है अन्य वस्तुएं जैसे वो भी दहेज़ में लायी गयी थीं। यह मानव तस्करी की परिधि में आता है लेकिन वे जिन्दा नहीं हैं वरना मुकदमा चलाया जाता। इनकी माँ और चाची को घूँघट ठीक न रखने पर लक्ष्मी अम्मा ने डांटा तो क्या उससे सामाजिक स्तर बदल गया। लक्ष्मी अम्मा की डांट को दादा-दादी ने इसलिए समर्थन किया कि औरतों को घूँघट में रखने की परंपरा थी। कम से कम विश्वास जी को इस गुलाम प्रथा का समर्थन नहीं करना चाहिए लेकिन विडियो में देखने से लगता है जैसे कोई सम्मान की बात हो। जिस जाति व्यवस्था की इन्हें निंदा करनी चाहिए और उसी कि महिमा मंडित कर रहे हैं क्योंकि उस जाति व्यवस्था में सफाई करने वाली मेहतरानी पढ़-लिख नहीं सकती थी और न ही शासन-प्रशासन में भागीदार। आश्चर्य होता है कि आम आदमी पार्टी ने इस पर कोई रुख नहीं जाहिर किया इससे लगता है कि ये दलितों, पिछड़ों और महिलाओं को कमतर देखते हैं और सामंती व्यवस्था के समर्थक हैं।

डॉ. उदित राज ने आगे कहा कि आरक्षण सबसे पहले बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर ने दिया। अब कुमार विश्वास खंडन कर रहे हैं कि उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री श्री वी. पी. सिंह के लिए कहा जिन्होंने मंडल कमीशन की घोषणा की। यहाँ भी इनकी कुत्सित मानसिकता झलकती है कि जैसे पिछड़ों को अगर सरकारी नौकरियों में आरक्षण दिया गया तो उससे जातीय ढांचा टूटा। बिना जातीय ढांचा तोड़े देश में समता मूलक समाज नहीं स्थापित किया जा सकता है और न ही ग्लोबल पॉवर। आरक्षण का आन्दोलन वी. पी सिंह जी ने कभी नहीं चलाया बल्कि प्रधानमंत्री होते हुए मंडल कमीशन लागू करने की घोषणा की। वी.पी सिंह जी ने मंडल कमीशन की घोषणा की थी और लागू करने का कार्य सुप्रीम कोर्ट ने 1992 में किया था। श्री विश्वास चाहते है कि जातीय ढांचा वही बना रहे जो पुराने ज़माने में था जिसमे दलित, पिछड़े और महिलाओं की भागीदारी नहीं हुआ करती थी और वे गुलाम कि भांति रहते थे।

श्री कुमार विश्वास ने यह आरोप लगाया कि 2019 में भारतीय जनता पार्टी देश का धार्मिक ढांचा तोड़ देगी। जिसका नुक्सान हजारों वर्ष तक रहेगा। सीधे तौर पर इन्होंने भारतीय जनता पार्टी पर देश का धार्मिक ढांचा तोड़ने का आरोप लगाया है। देश में दलित, पिछड़े बहुत ही आन्दोलनरत हैं और इनकी निंदा की जा रही है। हर जगह से यही प्रश्न उठ रहा है कि आम आदमी पार्टी के नेता श्री अरविन्द केजरीवाल क्या सहमत हैं? सहमत न होते तो अभी तक अपना रुख स्पष्ट करते। आगामी 26 दिसम्बर को रामलीला मैदान, नई दिल्ली में अनुसूचित जाति/जनजाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ के द्वारा विशाल रैली होगी जिसमे यह मुद्दा भी प्रमुखता से उठाया जायेगा।

***

आगामी रैली से संबधित पोस्टर का नमूना छापा जा रहा है। परिसंघ के नेताओं से अपील है कि प्रदेश एवं जिला इकाइयों की ओर से भी छपवाकर वितरित करें।

दिल्ली चलो! दिल्ली चलो!! दिल्ली चलो!!!

"अभी नहीं – तो कभी नहीं"

अनुसूचित जाति/जनजाति संगठनों का

अखिल भारतीय परिसंघ

के तत्वावधान में

पदोन्नति व निजी क्षेत्र में आरक्षण एवं ठेकेदारी प्रथा की समाप्ति हेतु

रैली

डॉ. उदित राज (Ex. IRS),
राष्ट्रीय अध्यक्ष, परिसंघ

26 दिसंबर, 2017
मंगलवार, सुबह 11 बजे
रामलीला मैदान, नई दिल्ली

AIParisangh
AIParisangh
9899766443
parisangh1997@gmail.com
All India Parisangh
www.aiparisangh.com

भारी संख्या में भाग लेकर रैली को सफल बनाएं

निवेदक : ओम प्रकाश सिंघमार, परमेन्द्र, देवी सिंह राणा, एन.डी. राम, सत्या नारायण, सविता कादियान पंवार, संजय राज (दिल्ली), सुशील कमल, नीरज चक, राज कुमार (उ.प्र.), सिद्धार्थ भोजने, दीपक तभाने, संजय कांबले, अर्चना भोयर, सुनील जोडे (महाराष्ट्र), एस.पी. जरावता (हरियाणा), तरसेम सिंह घारु, रोहित सोनकर (पंजाब), विश्राम मीना, एम.एल. रासु, मुकेश मीना (राजस्थान), विजय राज अहिरवार, हीरा लाल (उत्तराखंड), आलेख मलिक, डी.के. बेहेरा (उड़ीसा), परमहंस प्रसाद, नरेन्द्र चौधरी, विपिन टोपो (म.प्र.), रामूभाई वाघेला, उत्पल कुलकर्णी (गुजरात), एस. करुपइया, पी. एन. पेरुमल (तमिलनाडु), रमन बाला कृष्णन (केरल), मधु चन्द्रा, रेव लन्धू हिलेरी ए (मणिपुर), के. महेश्वर राज, प्रकाश राठौर (तेलंगाना), Ch. दास (आंध्र प्रदेश), हर्ष मेश्राम, प्रदीप सुखदेवे (छ.ग.) पी. बाला (प.बंगाल), मधुसूदन कुमार, विल्फ्रिड केरकेट्ठा (झारखंड), आर.के कलसोत्रा (जम्मू व कश्मीर), मदनराम, शिवधर पासवान (बिहार), जे. श्रीनिवासलू (कर्नाटक), सीताराम बंसल, निहाल सिंह निहलता (हि.प्र.), प्रदीप बारफोर (असम)

पत्राचार : टी-22 अतुल ग्रोव रोड, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001 फोन : 011-23354841/42, मो. 9868978306, टेलीफैक्स : 011-23354843

आगामी रैली से संबधित हैंडबिल का नमूना छापा जा रहा है। परिसंघ के नेताओं से अपील है कि प्रदेश एवं जिला इकाइयों की ओर से भी छपवाकर वितरित करें।

प्रमुख उपलब्धियां

1. तीन संवैधानिक संशोधन कराकर आरक्षण बचाया
2. बहुजन लोकपाल बिल पेश करके लोकपाल में आरक्षण कराया
3. 4 नवंबर 2001 को लाखों लोग बौद्ध बने
4. पदोन्नति में आरक्षण के लिए सुप्रीम कोर्ट में पैरवी की
5. संसद में सबसे अधिक दलित मुद्दे उठाए
6. पिछड़ों को उच्च शिक्षा में आरक्षण का समर्थन

प्रमुख मुद्दे

1. पदोन्नति व निजी क्षेत्र में आरक्षण
2. आरक्षण कानून बनाओ
3. सेना और उच्च न्यायपालिका में आरक्षण
4. सफाई काम में ठेकेदारी प्रथा को समाप्त करना
5. बैकलॉग पदों को भरने हेतु विशेष भर्ती अभियान
6. समान शिक्षा एवं भूमिहीनों को भूमि
7. अनुसूचित जाति योजना एवं जन जाति उप योजना कानून बनाओ
8. एक राज्य का जाति प्रमाण-पत्र सभी राज्यों में मान्य हो
9. महंगाई की दर से छात्रवृत्ति में बढ़ोत्तरी
10. राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग का गठन और उसमें आरक्षण
11. जम्मू व कश्मीर में धारा 370 हटाया जाए और आरक्षण लागू हो

साथियो,

लोगों को यह लगता है कि पदोन्नति में आरक्षण भी समाप्त हो रहा है, उसको लेकर प्रभावित लोग कुछ चिंतित हैं, उससे भी बड़ा खतरा सरकारी नौकरी लगभग समाप्ति की ओर है। कारण है आउट सोर्सिंग, ठेकेदारी, विनिवेश और एफ.डी.आई. आदि। जहां पहले हजारों की भर्ती की सूचना अखबारों में निकलती थी अब कभी-कभार कुछ ही देखने को मिलता है। सेंट्रल इलेक्ट्रानिक्स लिमिटेड, बी.ई.एम.एल., सालेम स्टील प्लांट जैसी सरकारी कंपनियों को हाल ही में बेच दिया गया है, अब यहां आरक्षण खत्म। अभी 21 रेलवे स्टेशनों का निजीकरण हुआ और एअर इंडिया, जहां लाखों नौकरियां हैं, निजीकरण के रास्ते पर है लेकिन आरक्षण का कोई प्रावधान नहीं किया जा रहा है। अनुसूचित जाति/जन जाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ ने ही निजी क्षेत्र में आरक्षण की बात सन् 2002 से उठाकर राष्ट्रीय स्तर पर बहस में ला दिया था लेकिन आवश्यक सहयोग न होने की वजह से यूपीए सरकार जो कुछ करने वाली थी वह भी रुक गया। ठेकेदारी का रास्ता निकालकर सरकारी नौकरी ही नहीं समाप्त की जा रही है, बल्कि मजदूरों का आर्थिक शोषण भी तेज हो गया है। शिक्षा के निजीकरण की वजह से दलित, आदिवासी, पिछड़े एवं अल्पसंख्यक अच्छी शिक्षा प्राप्त करने से वंचित हो रहे हैं। शिक्षण संस्थानों में भेदभाव बढ़ा है, चाहे वह हैदराबाद विश्वविद्यालय में रोहित वेमुला का मामला हो या जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय हो। जातीय पूर्वाग्रह के कारण ही सहारनपुर में भीम सेना ने जन्म लिया और दबंगों और दलितों के बीच भीषण संघर्ष जारी है।

जब तक कुछ बातों पर विमर्श नहीं होता तब तक संघर्ष भी सही दिशा में नहीं हो पा रहा है। पहला, विधायक, सांसद, मंत्री इसलिए नहीं लड़ेंगे, क्योंकि दलित का भी वोट इनके कहने से नहीं बल्कि राजनैतिक पार्टियों के प्रभाव से पड़ता है। जब एक दलित सांसद खुद के लिए दलित का वोट प्राप्त नहीं कर पाता तो वह क्या इनके लिए लड़ सकता है ? जब अत्याचार होता है तो दलित नेता याद आते हैं। जो ज्यादा दलित-प्रेम दिखाने की कोशिश करता है तो उसी के दूसरे या तीसरे भाई को खड़ा कर दिया जाता है। बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर ने यह जरूर कहा था कि राजनैतिक सत्ता से सारे ताले खुल जाते हैं। यह कथन सत्य है लेकिन वे खुद कांग्रेस में रहकर इतना कुछ कर गए, जबकि राजनैतिक सत्ता नेहरू जी के हाथ में थी। जिस तरह से जाट और पटेल समाज बिना नेताओं के सड़क पर उतरकर संघर्ष किया, वैसा ही करना पड़ेगा, वरना राजनैतिक सत्ता के इंतजार में सबकुछ खो बैठेंगे।

विधायिका और कार्यपालिका आरक्षण खत्म नहीं कर सकती इसलिए न्यायपालिका का सहारा लिया जा रहा है। पदोन्नति में आरक्षण की समस्या मध्य प्रदेश, उ.प्र., जम्मू व कश्मीर जैसे राज्यों में पैदा होने की वजह से सुप्रीम कोर्ट में बहस चल रही है। जज का कहना है कि एक ड्राइवर और एक जज एक समान नहीं हो सकते। जातीय व्यवस्था में ड्राइवर एवंज जज समान हैं। ड्राइवर की जिंदगी कार ड्राइविंग सीट पर नहीं बीतती और जज की फाइल में नहीं, इंसान जिंदगी समाज में ही जीता है। इस तर्क के द्वारा न्यायपालिका दलित और आदिवासी आरक्षण में भी क्रीमीलेयर लाने का षड्यंत्र कर रही है। सुप्रीम कोर्ट संसद का अधिकार छीनकर किस तरह से दलित जज कर्णन का हाल किया और आज वे जेल में हैं।

अनुसूचित जाति/जन जाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ ने 5 आरक्षण विरोधी आदेश, जो 1997 में जारी हुए थे, के खिलाफ संघर्ष किया और 3 संवैधानिक संशोधन कराकर आरक्षण बचाया। पिछड़ों के लिए मिले उच्च शिक्षण संस्थानों में आरक्षण के लिए लड़ाई लड़ा। बहुजन लोकपाल बिल बनाकर लोकपाल में आरक्षण कराया। 2006 में पदोन्नति में आरक्षण के मुकदमे (नागराज) की पैरवी सरकार से 40 लाख रुपये दिलवाकर निजी वकील से करायी। डॉ. उदित राज ने निजी क्षेत्र में आरक्षण के लिए संसद में बिल पेश किया, जाट और मराठा जैसे सामाजिक आंदोलन का समर्थन मिला होता तो अब तक संसद कानून बनाने के लिए बाध्य हो जाती। देश में परिसंघ ही एक ऐसी संस्था है, जो लाखों कर्मचारियों व अधिकारियों की समस्याओं के लिए पत्र लिखकर या टेलीफोन करके सहायता करता रहता है। 4 नवंबर, 2001 को लाखों लोगों को बौद्ध बनाया। क्या देश में कोई अन्य ऐसी संस्था है जिसने अधिकार दिलाया हो और वैचारिक लड़ाई भी लड़ी हो। हां, कुछ संगठन हैं जो दुश्मन को गाली-गलौच देकर लोगों को एकत्रित कर लेते हैं, लेकिन क्या मैदाने जंग में अधिकार लेने के लिए कभी आए। परिसंघ सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनो में आगे है। हम तो कहते हैं कि परिसंघ से अच्छा कोई और संगठन हो तो उसका साथ दो नही तो जात-पांत, एवं अहंकार भूलकर 26 दिसंबर को रामलीला मैदान, नई दिल्ली में 11 बजे लाखों की संख्या में शामिल हों। याद रखें कि संख्या ही एक हमारी ताकत है। लाखों गोष्ठी और स्थानीय मीटिंगें जगह-जगह पर कर ली जाएं तो उसका प्रभाव नहीं होने वाला है, जितना कि लाखों की संख्या में दिल्ली में इकट्ठा होकर।

निवेदक : ओम प्रकाश सिंहमार, परमेन्द्र, देवी सिंह राणा, एन.डी. राम, सत्या नारायण, सविता कादियान पंवार, संजय राज (दिल्ली), सुशील कमल, नीरज चक, राज कुमार (उ.प्र.), सिद्धार्थ भोजने, दीपक तभाने, संजय कांबले, अर्चना भोयर, सुनील जोडे (महाराष्ट्र), एस.पी. जरावता (हरियाणा), तरसेम सिंह धारू, रोहित सोनकर (पंजाब), विश्राम मीना, एम.एल. रासु, मुकेश मीना (राजस्थान), विजय राज अहिरवार, हीरा लाल (उत्तराखंड), आलेख मलिक, डी.के. बेहेरा (उड़ीसा), परमहंस प्रसाद, नरेन्द्र चौधरी, विपिन टोपो (म.प्र.), रामूभाई वाघेला, उत्पल कुलकर्णी (गुजरात), एस. करूपइया, पी. एन. पेरुमल (तमिलनाडु), रमन बाला कृष्णन (केरल), मधु चन्द्रा, रेव लन्घू हिलेरी ए (मणिपुर), के. महेश्वर राज, प्रकाश राठौर (तेलंगाना), बैप दास (आंध्र प्रदेश), हर्ष मेश्राम, प्रदीप सुखदेवे (छ.ग.) पी. बाला (प.बंगाल), मधुसूदन कुमार, विल्फ्रिड केरकेट्टा (झारखंड), आर.के कलसोत्रा (जम्मू व कश्मीर), मदनराम, शिवधर पासवान (बिहार), जे. श्रीनिवासलू (कर्नाटक), सीताराम बंसल, निहाल सिंह निहलता (हि.प्र.), प्रदीप बास्फोर (असम)

Major Achievements:

1.Saved Reservation through 3 constitutional amendments
2.Secured Reservation in Lokpal
3.Lakhs of people adopted Buddhism on 04 th November, 2001
4.Raised issue of reservation in higher judiciary
5.Raised highest number of questions about SC/ST cause in Parliament
6.Espoused the cause of OBCs in higher education

Major Issues :

1. Reservation in promotion and in private sector
2. Enact Reservation Act
4. Reservation in higher judiciary and armed forces
5. Ban recruitment on contract
6. Special recruitment drives to fill backlog posts
7. Free and Equal Education and land to the landless
8. Law for implementation of SCP and TSP
9. Caste certificates of one state made valid in all states
10. Increase in educational scholarships in line with price rise
11. All India Judicial Services to be implemented
12. Reservation in Jammu and Kashmir by removing Article 370

We, a few affected feel that reservation in promotion is a very important issue but the real danger is the erosion of government jobs which is being done under the garb of Outsourcing, Contract System, Disinvestment and FDI etc. It is indeed very dangerous as it is going unnoticed by most.

There was a time when thousands of government jobs used to be advertised in the newspapers but now they are reduced to a few. Central Electronics Limited, BEML, Salem Steel Plant like public sector undertakings have been privatized which means the death of reservation. Recently 21 railway stations were privatized and one of the largest govt company, Air India is on the verge of privatization without provision of reservations.The All India Confederation Of SC/ST Organization raised the issue of reservation in private sector from the year 2002 onwards. Since then it has gained momentum and became a national issue. The UPA government was pressurized to do something in this direction but due to weak mass support on our side , it was scuttled. The contract system is not only killing the jobs in the government but also increasing economic exploitation of workers. The privatization in education has excluded Dalits, Tribals, OBCs and Minorities. Discrimination in academia has become the order of the day, the painful demise of Rohit Vemula being case in point.Caste abhorrence and atrocities have led to the birth of organizations like Bhim Sena.

There are contradictions and without resolving them the struggle cannot be headed in the right direction. Do not expect from the Dalit and Adivasi legislators who will fight for you because SCs/STs vote under the influence of political parties. A Dalit Legislator can't get votes of Dalits on his own appeal . If a legislator tries to be vocal for the cause, he will be side lined and others will replace . Baba Saheb Ambedkar was right in saying that political power is the master key .He joined the Congress and did a lot despite the fact that Nehru Ji had master key . The way the Patels and Jaats struggled for reservation without the help of politicians, sets an example for us and similarly we should not wait for political power.

Executives and Legislators cannot do away with reservation ,so the judiciary has been set to this task. The issue of reservation in promotion in UP ,MP and J&K has come up in the Supreme Court . So far there was uncertainty about reservation in promotion but now supreme court is threatening reservation itself. It is suggesting applying the concept of creamy layer in SC/ST akin to OBC reservation, by citing that a driver and a judge cannot be equal. The fact is that a judge or driver if they belong to same caste are equal but lower caste judge cannot be equal to upper caste judges. How Supreme Court,assuming the power of parliament ,has punished dalit judge Karanan who is in jail . A driver lives in society, not on car steering and neither does the judge live in the files of courts.

The All India Confederation of SC/ST Organization (Parisangh) was founded in 1997 to oppose 5 anti-reservation orders and due to it's struggle 3 constitutional amendments were made. It fought for reservation for OBC in higher education. It's Bahujan Lokpal Bill led to the provision of reservation in Lokpal. The Parisangh defended reservation in promotion case (Nagraj) in Supreme Court in the year 2006 by hiring a private lawyer through government for a amount of 40 Lakhs. Dr. Udit Raj, Member of Parliament, succeeded in introducing the private member bill for reservation in Private Sector in the Parliament, but due to lack of mass moment like in the case of Jaats and Patels, it has not progressed further. The Parisangh is the only organization which takes up day to day problems of SC/ST employees in the country. Lakhs of Dalits adopted Buddhism under it's banner on November 4, 2001. Is there any other organization in the country which has fought for ideological and constitutional rights. There are organizations who garner support by showing the enemy , but they never jump into battle field. We say that if there is any other better organization than us, then support that otherwise rise above caste and ego and join the rally on 26th December'17 at Ramleela Ground New Delhi at 11 AM. Remember the strength lies in numbers, having scattered meetings will not serve the purpose.

By: Om Prakash Singhmar, Parmendra, Devi Singh Rana, N.D. Ram, Satya Narayan, Savita Kadiyan Panwar, Sanjay Raj (Delhi), Sushil Kamal, Niraj Chak, Raj Kumar (U.P.), Sidharth Bhojane, Deepak Tabhane, Sanjay Kamble, Archana Bhoyar, Sunil Jode (Maharashtra), S.P. Jaravata (Haryana), Tarsem Singh Gharu, Rohit Sonkar (Punjab), Vishram Meena, M.L. Rasu, Mukesh Meena (Rajsthan), Vijay Raj Ahirwar, Heera Lal (Uttarakhand), Alekh Mallick, D.K. Behera (Odisha), Paramhans Prasad, Narender Chaudhary, Vipin Toppo (M.P.), Ramubhai Vaghela, Utpal Kulkarni (Gujrat), S.Karuppaiah, P.N. Perumal (Tamilnadu), Raman Bala Krishanan (Kerala), Madhu Chandra, Rev Langhu Hillery A. (Manipur), K. Maheshwar Raj, Prakash Rathod (Telangana), Ch. Das (A.P.), Harsh Meshram, Pradeep Sukhadeve (C.G.), P. Bala (W.B.), Madhusudan Kumar, Wilfrid Kerketta (Jharkhand), R.K. Kalsotra (J&K), Madan Ram, Sheodhar Paswan (Bihar), J.Sreenivasulu (Karnataka), Sitaram Bansal, Nihal Singh Nihalta (H.P), Pradeep Basfore (Assam)

परिसंघ की बेबसाइट पर ऑनलाइन सदस्य बने एवं सहयोग राशि भेजें

अनुसूचित जाति/जन जाति संगठनों का अखिल भारतीय परिसंघ की बेबसाइट www.aiparisangh.com पर अब ऑनलाइन सदस्यता एवं डोनेशन का प्रावधान कर दिया गया है। बेबसाइट पर जाकर कोई भी सदस्यता शुल्क की ऑनलाइन पेमेंट करके वार्षिक एवं आजीवन सदस्य बन सकता है। इस पर डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, नेट बैंकिंग आदि सभी माध्यमों से पेमेंट की जा सकती है। अब कोशिश रहे कि ज्यादातर ऑनलाइन ही किया जाए, फिर भी यदि सदस्यता फार्म और डोनेशन की रसीदें छपी हुई चाहिए तो राष्ट्रीय कार्यालय में सुमित मो . 9868978306 से सम्पर्क किया जा सकता है।

परिसंघ के पदाधिकारियों से निवेदन है कि प्रयास करके अधिक से अधिक लोगों को सदस्य बनाएं। यदि प्रदेश या जिले स्तर के पदाधिकारी अन्य लोगों को सदस्य बना रहे हैं तो वे फार्म में रेफर्ड बाई के कॉलम में अपना नाम अवश्य लिखें, इससे राष्ट्रीय कार्यालय को पता लग सकेगा कि किस पदाधिकारी द्वारा कितना ऑनलाइन डोनेशन कराया गया है और उनके माध्यम से कितने सदस्य बनाए गए हैं। इसके अलावा बेबसाइट पर परिसंघ का संक्षिप्त परिचय, राष्ट्रीय अध्यक्ष का परिचय के साथ-साथ राष्ट्रीय एवं प्रदेश पदाधिकारियों के फोटो के साथ पता एवं मोबाइल नंबर भी दिया गया है, (http://aiparisangh.com/office-bearers/) ताकि जो लोग अलग-अलग प्रदेशों से बेबसाइट देखें उन्हें पता लग सके कि उस प्रदेश के किस पदाधिकारी से सम्पर्क किया जा सकता है। इसके अलावा 'वॉयस ऑफ बुद्धा' भी बेबसाइट पर जाकर पढ़ा जा सकता है।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर जी का जीवन परिचय

गीता में कहा गया है- ''यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः अभ्युथानम् अधर्मस्य तदात्मानम सृजाम्यहम्।'' अर्थात 'जब-जब पृथ्वी पर अधर्म का साम्राज्य स्थापित हो जाता है, तब-तब अधर्म का नाश कर धर्म की स्थापना करने के लिए ईश्वर अवतार लेते हैं।' अंग्रेजों के शासनकाल में जब भारतमाता गुलामी की जंजीरों में जकड़ी कराह रही थीं, तब उस घड़ी में भी दकियानूसी एंव गलत विचारधारा के लोग मातृभूमि को विदेशियों के चंगुल से मुक्त कराने के लिए संघर्ष करने के बजाय मानव-मानव में जाति के आधार पर विभेद करने से नहीं हिचकते थे । ऐसी प्रतिकूल परिस्थिति में कट्टरपंथियों का विरोध कर दलितों का उद्धार करने एवं भारत के स्वतंत्रता संग्राम को सही दिशा देने के लिए जिस महामानव का जन्म हुआ, उन्हें ही दुनिया डॉ. भीमराव अम्बेडकर के नाम से जानती है । वे अपने कर्मो के कारण आज भी दलितों के बीच ईश्वर के रुप में पूजे जाते हैं ।

भीमराव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को केंद्रीय प्रांत (अब मध्यप्रदेश) के मूह में हुआ था । उनके पिता रामजी मालोजी सकपाल सेना में सूबेदार मेजर थे तथा उस समय मूह कें छावनी में तैनात थे। उनकी माता का नाम भीमाबाई मुरबादकर था। भीमराव का परिवार हिन्दू धर्म के महार जाति से संबंधित था, उस समय कुछ कट्टरपंथी स्वर्ण इस जाति के लोगों को अस्पर्श्य समझकर उनके साथ भेदभाव एंव बुरा व्यवहार करते थे। यही कारण है कि भीमराव को भी बचपन में सवर्णो के बुरे व्यवहार एंव भेदभाव का शिकार होना पड़ा। स्कूल में उन्हें अस्पर्शय जानकर अन्य बच्चों से अलग एंव कक्षा से बाहर बैठाया जाता था। अध्यापक उन पर ध्यान भी नहीं देते थे। उन्हें प्यास लगने पर स्कूल में रखे पानी के बर्तन को छूकर पानी पीने की अनुमति नहीं थी, चपरासी या कोई अन्य व्यक्ति ऊंचाई से उनके हाथों पर पानी डालता था। यदि कभी चपरासी नहीं होता या कोई अन्य व्यक्ति ऐसा नहीं करना चाहता था, तो ऐसी स्थिति में उन्हें प्यासा ही रहना पड़ता था। लोगों के इस भेदभाव एंव बुरे व्यवहार का प्रभाव उन पर ऐसा पड़ा कि दलितों एंव अस्पर्श माने जाने वाले लोगों के उत्थान के लिए उन्होंने उनका नेतृत्व करने का निर्णय लिया तथा उनके कल्याण हेतु एंव उन्हें उनके वास्तविक अधिकार व सम्मान दिलाने के लिए दकियानूसी तथा कट्टरपंथी लोगों के विरुद्ध वे जीवनभर संघर्ष करते रहे।

1905 ई. में उनका विवाह रामाबाई नामक एक कन्या से हो गया और उसी वर्ष उनके पिता उन्हें लेकर बम्बई चले गए, जहां उनका नामांकन एलफिन्सटन स्कूल में करवा दिया गया। 1907 ई. में जब उन्होंने अच्छे अंकों के साथ मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली, तो बड़ौदा के महाराजा सयाजी राव गायकवाड़ ने प्रसन्न होकर उन्हें 25 रुपये मासिक छात्रवृत्ति देना प्रारंभ किया । 1912 ई. में बी.ए. करने के बाद बड़ोदा महाराज ने उन्हें अपनी फौज में उच्च पद पर नियुक्त कर लिया। 1913 ई. में अपने पिता की मृत्यु के बाद उन्होंने इस नौकरी से त्याग-पत्र देकर उच्च शिक्षा हेतु विदेश जाने का फैसला किया। बड़ौदा के महाराज ने उनके इस फैसले का स्वागत किया एंव उनके त्याग-पत्र को स्वीकार कर उन्हें उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति भी प्रदान की। इसके बाद भीमराव अमेरिका चले गए, जहां न्यूयार्क के कोलंबिया विश्वविद्यालय से उन्होंने 1915 ई. में एम. ए. तथा 1916 ई. में पी. एच. डी. की उपाधि प्राप्त की। पी. एच. डी की डिग्री प्राप्त करने के बाद भी उच्च शिक्षा की उनकी भूख शांत नहीं हुई थी, इसलिए 1923 ई. में वे इंग्लैंड चले गए, जहां लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से उन्होंने डॉक्टर ऑफ साइंस की डिग्री प्राप्त की । इसके बाद कानून में कैरियर बनाने के दृष्टिकोण से उन्होंने बार एट लॉ की डिग्री भी प्राप्त की ।

कानून की पढ़ाई पूरी करने के बाद 1923 ई. में अम्बेडकर स्वदेश लौटे तथा बम्बई उच्च न्यायालय में वकालत करना प्रारंभ किया। यहां भी उन्हें अपनी जाति के प्रति समाज की गलत धारणा एवं भेदभाव के कारण अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा । उन्हें कोर्ट में कुर्सी नहीं दी जाती थी तथा कोई मुवक्किल उनके पास

नहीं आता था। संयोगवश उन्हें एक हत्या का मुकदमा मिला, जिसे किसी भी बैरिस्टर ने स्वीकार नहीं किया था। उन्होंने इतनी कुशलता से इस मामले की पैरवी की कि जज ने उनके मुवक्किल के पक्ष में निर्णय दिया । इस घटना से अम्बेडकर को खूब ख्याति मिली ।

अम्बेडकर ने बचपन से ही अपने प्रति समाज के भेदभाव रूपी अपमान को सहा था । इसलिए उन्होंने इसके खिलाफ संघर्ष की शुरुआत की। इस उद्देश्य हेतु उन्होंने 1927 ई. में 'बहिष्कृत भारत' नामक मराठी पाक्षिक समाचार पत्र निकालना प्रारंभ किया। इस पत्र ने शोषित समाज को जगाने का अभूतपूर्व कार्य किया। उस समय दलितों को अछूत समझकर मन्दिरों में प्रवेश नहीं करने दिया जाता था। उन्होंने मन्दिरों में अछूतों के प्रवेश की मांग की और 1930 में 30 हजार दलितों को साथ लेकर नासिक के कालाराम मन्दिर में प्रवेश के लिए सत्याग्रह किया। इस अवसर पर उच्च वर्णो के लोगों की लाठियों की मार से अनेक लोग घायल हो गए, किन्तु उन्होंने सबको मन्दिर में प्रवेश करा कर ही दम लिया । इस घटना के बाद लोग उन्हें 'बाबा साहब' कहने लगे । उन्होंने 1935 ई. में 'इंडिपेंडेंट लेबर पार्टी' की स्थापना की, जिसके द्वारा उन्होंने दलित एवं अछूत समझे जाने वाले लोगों की भलाई के लिए कट्टरपंथियों के विरुद्ध संघर्ष प्रारंभ किया। सन 1937 ई. में बम्बई के चुनावों में इनकी पार्टी को 15 में से 13 स्थानों पर जीत हासिल हुई। हालाँकि अम्बेडकर गांधी जी के दलितोद्धार के तरीकों से सहमत नहीं थे, लेकिन अपनी विचारधारा के कारण उन्होंने कांग्रेस के जवाहरलाल नेहरू एवं सरदार वल्लभ भाई पटेल जैसे बड़े नेताओं को अपनी ओर आकर्षित किया । जब 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ तो उन्हें स्वतंत्र भारत का प्रथम कानून मंत्री बनाया गया । इसके बाद उन्हें भारत की संविधान प्रारूप समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया । भारत के संविधान को बनाने में अम्बेडकर ने मुख्य भूमिका निभाई, इसलिए उन्हें भारतीय संविधान का निर्माता भी कहा जाता है । अपने जीवनकाल में अपने उद्देश्यों की पूर्ति हेतु उन्होंने कई पुस्तकों की रचना भी की । जिनमें से कुछ उल्लेखनीय पुस्तकें हैं - 'अनटचेबल्स हू आर दे', 'स्टेट्स एण्ड माइनॉरिटीज', 'हू वर दी शूद्राज', 'बुद्धा एंड हिज धम्मा', 'पाकिस्तान एंड पार्टीशन ऑफ इंडिया', 'थाट्स ऑफ लिंग्युस्तिक स्टेट्स', 'द प्रॉब्लम ऑफ द रूपी', 'द इवोल्यूशन प्राविन्शियल फाइनेंस इन ब्रिटिश इंडिया', 'द राइज एंड फाल ऑफ हिन्दू वूमेन', इमैनसिपेशन ऑफ द अनटचेबल्स' । अम्बेडकर सभी धर्मो का समान रूप से आदर करते थे। वे हिन्दू धर्म के खिलाफ नहीं थे तथा इस धर्म की बुराईयों एंव इसमें निहित भेदभाव को दूर करना चाहते थे । उन्हें जब लगने लगा कि कट्टरपंथी एंव दकियानूसी विचारधारा के लोगों के रहते हुए पिछड़े एंव दलितों का भला नहीं हो सकता, तो उन्होंने भी धर्म-परिवर्तन का निर्णय लिया । 14 अक्टूबर 1956 को उन्होंने दशहरे के दिन नागपुर में एक विशाल समारोह में लगभग 2 लाख लोगों के साथ बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया ।

डॉ. भीमराव अम्बेडकर एक महान विधिवेत्ता, समाज सुधारक, शिक्षाविद एंव राजनेता थे । उन्होंने अन्याय, असमानता, छुआछूत, शोषण तथा ऊंच-नीच के खिलाफ जीवन भर संघर्ष किया । 6 दिसंबर 1956 को भारत के इस महान सपूत एवं दलितों के उद्धारक व मसीहा का निधन हो गया । उनकी उपलब्धियों एंव मानवता के लिए उनके योगदान को देखते हुए भारत सरकार ने 1990 में उन्हें मरणोपरांत देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया। अम्बेडकर आज सशरीर हमारे बीच भले न हों किन्तु यदि आज दलितों को बहुत हद तक उनका सम्मान मिला है तथा समाज में छुआछूत की भावना कम हुई है तो इसका अधिकांश श्रेय डॉ. भीमराव अम्बेडकर को ही जाता है। अम्बेडकर की विचारधारा पूरी मानवता का कल्याण करती रहेगी, उनका जीवन हम सबके लिए अनुकरणीय है ।

Appeal to the Reeaders

You will be happy to know that the Voice of Buddha will now be published both in Hindi and English so that readers who cannot read in Hindi can make use of the English edition. I appeal to the readers to send their contribution through bank draft in favour of **"Justice Publication"** at T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001. The contribution amount can also be transferred in **'Justice Publication' Punjab National Bank account no. 0636000102165381 branch Janpath, New Delhi** under intimation to use by email or telephone or by letter. Sometimes, it might happen that don't receive the Voice of Buddha. In that case kindly write to us and also check up with the post office. As we are facing financial crisis to run it, you all are requested to send the contribution regularly.

Contribution :
Five Year : Rs 600/-
One Year : Rs. 150/-

Not Padmavati but male chauvinism is the cause

Dr. Udit Raj

The protests against Padmavati have garnered international media's attention. So far, the Censor Board has not even viewed the movie and yet there are protests. Some protesters feel that Bhansali may have shown Padmini alias Padmavati as responding to Allauddin Khilji's advances resulting in some romantic scenes on screen — something that insulting to Hindus. The era of Khilji Dynasty was from 1296 to 1316, whereas the life span of poet Malik Mahommad Jayasis was from 1450 to 1550. When protestors are confronted with historical accounts they change their stand and take refuge in faith. Rajputs are refusing to go by history and think that it is an attack on their dignity. The underlying sentiment is of male chauvinism. They can treat their women the way they want but how dare others do so. There are villages in Rajasthan where marriage parties are happening after 100 hundred years which means that girls were killed on a mass scale. Is threatening the only way to stop the film? The Karni Sena is performing the job of semi army , isn't it the mockery of democracy? Are they really worried about women's plight?

The Karni Sena has taken it upon itself to oppose the film. The word Sena translates to Army in English and it seems that there is vacancy to create another army. There are a number of Senas like Ranvir Sena, Shiv Sena, Republican Sena and Maharashtra Nav Nirman Sena. In Maharashtra, Shiv Sena and Maharashtra Nav Nirman Sena keep on targeting innocent, poor migrants from North-Indians. It would be a good strategy to deploy the members of these pseudo-armies on the Indo-Pak border, of course they will not give their assent to the suggestion nor will they introspect. If they are deployed on the border not an inch land will be empty to get filtered by intruders. These Senas do not belong to the elected people's government then to whom they owe allegianc? Should we suppose that Democracy and feudalism are operating parallely? These Senas have root in casteism,religion and regionalism. Isn't that a challenge to the sovereignty of people-elected state. Despite challenge, the state shall not bow before them. There is no doubt that the elements of these Senas are interspersed in different political parties. Had it not been so, it is question of a few hours to wipe them out.

The Christianity is the biggest religion in the world and it influences most of the powerful and influential countries and institutions in the world. In year 2006, a film "The Da Vinci Code" was made on the life of Jesus. In the film Jesus is depicted marrying to a female, namely Magdalene and not only this even a birth of child is shown. Innumerable catholic organizations appealed to the film director Ron Howard that at least he should agree to add a disclaimer at the beginning of film. He refused to oblige even this less. The most powerful religious shrine Vatican Cardinal exhorted the Christian community to take legal recourse against the film, however that did not work. For Christians, Christ is God and one can imagine the stature of God. It is not hidden what has been the status of women. Besides The Da Vinci Code many other films have been made on Christ and they also depicted similar facts on him. The Christians have never resorted to issuing threats to chop off the actress's nose and reward to inflict harm on the film makers. This is the real strength of Christianity. New Zealand, Australia and America are very young nations and evolved within 300 years of time. The became Christian nations through free will. If they would have resorted to coercion, they might have not become Christian countries. The beauty of theirs is to deny the allegations and blasphemy by writings, theatre, film, seminar, debates and discussions.

When a film was made on Pholan Devi she was shown half naked but neither her caste nor Dalits and tribal resorted to violent methods. If Karni Sena is so concerned about dignity of women in general then they would have opposed to Phoolan Devi being stripped of her dignity. They did not do so because she belonged to the Dalit community and this establishes that caste system is a reality. Where is this Sena when women are raped and their population ratio is going down day by day? This method of retaliation has harmed the cause of art and expression and freedom of speech. Isn't is true that the Rajputs are harming themselves by resorting to this methodology, rather than following an intellectual and democratic way. Padmavati commited Jahaur, an act of mass suicide, thinking that it is better to die than be captured by the enemy. Why isn't the same axiom is applicable in the case of men, because upon being captured they too are not treated with dignity and respect. The world will think that India has a dearth of writers, intellectuals and democratic forces to counter such acts if at all there is like this rather the Sena is allowed to bully the film makers.

26 दिसंबर, 2017 को रामलीला मैदान, नई दिल्ली में अजा/जजा परिसंघ की रैली में आने-जाने वाले लोगों के लिए अतिरिक्त कोच की व्यवस्था के लिए रेल मंत्रालय ने सभी जोनों को आदेश जारी कर दिया है। परिसंघ के नेता संबंधित अधिकारियों से मिलकर अतिरिक्त कोच लगवाने की व्यवस्था कर लें।

भारत सरकार GOVERNMENT OF INDIA
रेल मंत्रालय MINISTRY OF RAILWAYS
रेलवे बोर्ड (RAILWAY BOARD)

FAX/POST COPY
ISSUED ON : 12.12.2017

THE GENERAL MANAGERS (OPTG.)	COPY TO:-
CR/MUMBAI	CPTM/CR/MUMBAI
ECR/HAJIPUR	CPTM/HAJIPUR
ECOR/BHUBANESWAR	CPTM-BHUBNESHWAR
ER/KOLKATA	CPTM/ER/KOLKATA
NR/NEW DELHI	CPTM/NEW DELHI
NER/GORAKHPUR	CPTM/NER/GORAKHPUR
NWR/JAIPUR	CPTM-NWR/JAIPUR
NCR/ALLAHABAD	CPTM/NCR/ALLAHABAD
NFR/GUWAHATI	CPTM/NFR/GUWAHATI
SR/CHENNAI	CPTM/SR/CHENNAI
SWR/HUBLI	CPTM/SWR/HUBLI
SECR/BILASPUR	CPTM/SECR/BILASPUR
SCR/SECUNDERABAD	CPTM/SCR/SOUTH CENTRAL RAILWAY
SER/KOLKATA	CPTM/SER/KOLKATA
WR/MUMBAI	CPTM/WR/MUMBAI
WCR/JABALPUR	CPTM/WCR/JABALPUR
	COM/KRCL/MUMBAI

NO.91/CHG.II/33/NF/5 PT-II (.) PLEASE REFER TO THIS OFFICE LETTER OF EVEN NUMBER DATED 23.11.2017 REGARDING ATTACHMENT EXTRA COACHES FOR ALL INDIA CONFEDERATION OF SC/ST ORGANISATIONS DELEGATES ATTENDING THEIR CONVENTION AT NEW DELHI (.) DR. UDIT RAJ, MP, NATIONAL CHAIRMAN, ALL INDIAN CONFEDERATION OF SC/ST ORGANISATION HAS NOW REQUESTED FOR ATTACHING EXTRA COACHES FOR DELEGATES ATTENDING THEIR CONVENTION AT DELHI ON 26.12.2017 (.) MINISTRY OF RAILWAYS DESIRES THAT RAILWAYS MAY CONSIDER THE REQUEST OF SHRI UDIT RAJ ON FULL TARIFF RATES SUBJECT TO OPERATIONAL FEASIBILITY AND AVAILABILITY OF REQUIRED COACHING STOCK (.) IT SHOULD BE ENSURED THAT ALL THE NECESSARY COMMERCIAL FORMALITIES INCLUDING REALISATION OF DETENTION, HAULAGE CHARGES AS PER EXTANT RULES, ARE COMPLETED BEFORE STARTING THE JOURNEY BY THE PARTY (.) TAKE ACTION ACCORDINGLY AND CONFIRM (.) GUHA RAILWAYS (.)

12/12/17

(Samir Kumar)
Director Frc. Trans (Chg.)-II
Railway Board

COPY TO:

1. EDPM, ED(C&IS), RAILWAY BOARD FOR INFORMATION AND NECESSARY ACTION.
2. SHRI UDIT RAJ, MP, T-22, ATUL GROVE ROAD, CONNAUGHT PLACE, NEW DELHI-110001.

VOICE OF BUDDHA

Publisher : Dr. UDIT RAJ (RAM RAJ), Chairman - Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42

● Year : 21 ● Issue 2 ● Fortnightly ● Bi-lingual ● Total Pages 8 ● 1 to 15 December , 2017

Sample of the Poster for the comming Rally is being published. It is an ernest appeal ot the Confederation Leaders that they should get it printed on behalf of State And District Units and distribute.

March Delhi ! March Delhi !! March Delhi !!!

ALL INDIA CONFEDERATION OF SC/ST ORGANIZATIONS

Calls

For Reservation in Promotion & Pvt. Sector & Ban on Contract System

RALLY

Dr. Udit Raj (Ex. IRS), National Chairman

26th December, 2017

Tuesday, at 11 AM

Ramlila Ground, New Delhi

AIParisangh
AIParisangh
9899766443
parisangh1997@gmail.com
All India Parisangh
www.aiparisangh.com

Join in large number to make the Rally successful

By: Om Prakash Singhmar, Parmendra, Devi Singh Rana, N.D. Ram, Satya Narayan, Savita Kadiyan Panwar, Sanjay Raj (Delhi), Sushil Kamal, Niraj Chak, Raj Kumar (U.P.), Sidharth Bhojane, Deepak Tabhane, Sanjay Kamble, Archana Bhoyar, Sunil Jode (Maharashtra), S.P. Jaravata (Haryana), Tarsem Singh Gharu, Rohit Sonkar (Punjab), Vishram Meena, M.L. Rasu, Mukesh Meena (Rajsthan), Vijay Raj Ahirwar, Heera Lal (Uttarakhand), Alekh Mallick, D.K. Behera (Odisha), Paramhans Prasad, Narender Chaudhary, Vipin Toppo (M.P.), Ramubhai Vaghela, Utpal Kulkarni (Gujrat), S.Karuppaiah, P.N. Perumal (Tamilnadu), Raman Bala Krishanan (Kerala), Madhu Chandra, Rev Langhu Hillery A. (Manipur), K. Maheshwar Raj, Prakash Rathod (Telangana), Ch. Das (A.P.), Harsh Meshram, Pradeep Sukhadeve (C.G.), P. Bala (W.B.), Madhusudan Kumar, Wilfrid Kerketta (Jharkhand), R.K. Kalsotra (J&K), Madan Ram, Sheodhar Paswan (Bihar), J.Sreenivasulu (Karnataka), Sitaram Bansal, Nihal Singh Nihalta (H.P), Pradeep Basfore (Assam)

Corres.: T-22 Atul Grove Road, Connaught Place. New Delhi -110001 Ph.No. 011-23354841/42, Mob.: 9868978306, Fax : 011-23354843

Publisher, Printer and Editor - Dr. UDIT RAJ (FORMERLY KNOWN AS RAM RAJ), on behalf of Justice Publications, T-22, Atul Grove Road, Connaught Place, New Delhi-110001, Tel: 23354841-42, Telefax:23354843, Printed at Sanjay Printing Works, WZ-4A, Basai Road, New Delhi.
Website : www.uditraj.com E-mail: parisangh1997@gmail.com Computer typesetting by C. L. Maurya